International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 02(I), April - June, 2022, pp.192-195

सतत् विकास के लक्ष्य एवं भारत : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

हरि प्रसाद यादव*

प्रस्तावना

आधुनिक समाजों में उपभोग प्रक्रियाएं तेजी से महत्वपूर्ण होती जा रही हैं। क्योंकि एक उपभोक्ता समाज में जिसमें व्यक्ति गैर जिम्मेदाराना तरीके से उपभोग करते है। लोगों को पर्यावरणीय और सामाजिक पहलुओं में कई जोखिमों और समस्याओं का सामना करना पड़ता हैं। भौतिक सम्पदा से सुख की तलाश और उपभोग को सभी समस्याओं के समाधान के रुप में देखते हुए मनुष्य अपने नैतिक आदर्शों को खो रहा है, संकिर्णतावादी हो रहा है, और बढते लालच के साथ प्रकृति का शोषण करके बड़ी समस्या पैदा कर रहा है। एक सतत विकास को पथ को आकार देना एक बडी चुनौती है जिसके परिणामस्वरुप भविष्य में उत्पादन और उपभोग प्रक्रियाओं में महत्तवपूर्ण परिवर्तन होंगे। अधिक टिकाऊ जीवन अपनाने के लिये लोगों को दमनकारी उपभोग की आदतों को त्यागना चाहिये और वैकल्पिक उपभोग मॉडल को अपनाना चाहिए।

साहित्य में वैकल्पिक उपभोग मॉडल के दायरे में पहुँच आधारित खपत, पुरानी खपत, सहयोगी खपत और स्वैच्छिक सादगी उभरती है। सहयोगात्मक खपत और स्वैच्छिक खपत को उपभोग विरोधी प्रथाओं के उपप्रकारो के रुप में भी देखा जाता है। उपभोग को कम करना उत्पादकों के जीवन चक्र को बढाना और अत्यधिक खपत व्यवहार को छोड़ना है।

एक्सेस आधारित खपत का ध्यान उत्पाद के स्वामित्व से उत्पाद के उपभोग की और स्थानान्तरित हो जाता है। इसे बाजार मध्यस्थ लेनदेन के रुप में परिभाषित किया गया है जो ग्राहकों को एक्सेस शुल्क के बदले में सामानों तक अस्थाई रुप से सीमित पहुँच प्रदान करता है जबकि कानुनी स्वामित्व सेवा प्रदाता के पास रहता है। पारम्परिक किराये पर सेवा एक्सेस आधरित व्यापार मॉडल में भिन्न होता है जो कि बाजार मध्यस्थता वाले आदान प्रदान उपभेक्ताओं के बीच मध्यस्थ फर्मो के माध्यम से होता है।

उत्पादन और अपशिष्ट प्रबन्धन से जुड़े पर्यावरणीय परिणामों को नये उत्पादों के बजाय पुराने उत्पादों को प्राप्त करके कम किया जा सकता है। कई अध्ययनों से लोगों का पुराना सामान खरीदने के प्रति नजरिया सामने आया है। उदाहरण के लिये इस्तमाल की गई चीजें खरीदने वाले उपभोगकर्ताओं के लिये प्राथमिक प्रेरणा व्यावहारिक और आर्थिक है। केवल कुछ प्रतिशत लोग ही पर्यावरण संबन्धी चिन्ताओं से प्ररित होते हैं। जिगद पाके–पोप्स के अनुसार युवा उपभोक्ताओं के पर्यावरणीय दृष्टिकोण और उनके हाथ से खरीददारी के व्यवहार के बीच कोई संबन्ध नही है।

तीसरा मॉडल सहयोगी खपत है। यह एक नई घटना हैजिसमें संसाधनों के उपयोग को कम करने के लिये शेयरिंग, ट्रेडिंग और बोटेरिंग शामिल है। यह तब होता है जब लाग उत्पादको को खरीदने या रखने के बजाय सीमित समय के लिये प्रोत्साहित करती है। इसका अभियोगात्मक व्यवहार से गहरा संबन्ध है।

* शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान।

पर्यावरण और जलवायु

भारत मे अधिकांश लोग परम्परागत रुप से अपने जीवन और आजीविका के लिये भूमि, जल और जंगल जैसे प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर है। प्राकृतिक संपदा पर एतिहासिक निर्भरता एक और समृद्ध पारम्परिक पारिस्थितिक ज्ञान लेती है और दूसरी और संसाधनों के अति दोहन के कारण तनाव पैदा करती है। भारत में जीवन, आजीविका और पर्यावरण से संबन्धित एसडीजी प्राप्त करने के लिये एक जुड़वां रणनीति का प्रस्ताव करके इस जटिलता को दूर करने का प्रयास करता है इस दोहरी रणनीति में शामिल हैः—(ए) भारत की आबादी के जीवन और आजीविका में सुधार, जनसंख्याकीय लाभांश चरण के आबादी के जीवन और आजीविका में सुधार, जो जनसांख्यिकीय लाभांश चरण के पहले दशक में है। और (बी) भारत के प्राकृतिक संसाधनों जल, जंगल, जमीन और जलवायु को पुनः जीवित करना जल, जंगल, जमीन, भूमि, पशुधन और वन्य जीवन और जलवायु दो लक्षणों के संयोजन में भारत में एसडीजी प्राप्त करने की क्षमता है। हालांकि लम्बे समय तक सार्वजनिक वित्तीय निवेश की कमी ने इन लक्ष्यो को समय पर प्राप्त करने की संभावना पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है।

(महाजन — सिंह, 2022)

जलवायु परिवर्तन एक ज्वलन्त और गंभीर विषय है। पृथ्वी की जलवायु बदल रही है। और इसका स्त्रोत बन गई है। ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन के विषयों पर दुनिया चच्र में है। हम यह जानते है कि मनुष्यों के पास है जीएचजी और एरोसोल के उत्सर्जन के माध्यम से और भूमि उपयोग में परिवर्तन के माध्यम से इसमें महत्तवपूर्ण योगदान दिया, जिसके परिणामस्वरुप व वैश्विक तापमान में वृद्धि हुई है। वैश्विक तापमान में वृद्धि के विभिन्न वैश्विक खतरे हो सकते है, जिसमें तुफान, बाढ, सुखा, बर्फ और ग्लेशियरों का पिघलना। सन् 1970 में ''क्लब ऑफ रोम'' के एक पेपर ने स्वीकार किया कि सीमित ग्रह संसाधन असीमित विकास को बनाये नही रख सकते है। यहाँ तक कि नवीकरण सम्पति भी समाप्त हो जायेगी। यदि इन्हे जल्दी से स्थानान्तरित नही किया जा सकता है या इनमें सुधार नही किया जाता है। वर्तमान समय में हम पृथ्वी पर लगभग 7 अरब जनसंख्या है, जिनका पृथ्वी भरण पोषण कर पा रही है, पर जब इससे अधिक जनसंख्या वृद्धि हो जायेगी तब पारिस्थितिकी तंत्र बिगड़ जायेगा। ग्लोबल वार्मिंग से स्थिरता की चुनौती बिगड़ रही है, क्योंकि इससे कृषि उत्पादन में कमी आ रही है। *(विजो, 2020)*

भारत में दुनिया की सबसे बड़ी आबादी है इसकी जलवायु, स्थालाकृति, जीवों, भूमि उपयोग और सामाजिक आर्थिक स्थितियों में व्यापक विविधता है। भविष्य में खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने में मदद करने के लिये कृषि प्रणालियों को वैश्विक परिवर्तन कारकों जैसे जनसंख्या वृद्धि, बदलती आहार आदतों और जलवायु परिवर्तन का सुधार करना होगा। हालांकि भविष्य में अन्न उत्पादन के तरिकों में विकासात्मक प्रगति होगी। 'संयुक्त राष्ट्र संघ' सतत् विकास लक्ष्यों (एसडीजी) के साथ संघर्ष कर सकता है जैसे भूमि संसाधनों की सुरक्षा, जलवायु परिवर्तन संबन्धी निर्णय लेने के लिये मानवीय जरुरतों और पर्यावरणीय प्रभावों का संतुलन खोजने के लिये इन लक्ष्यों के बीच संभावित 'ट्रेन्ड ऑफ' को समझना महत्तवपूर्ण है। इस पत्र में हम कृषि उत्पादकता, भूमि उपयोग और सन् 2030 तक भारत में भूमि आवरण परिवर्तन और स्थलीय जैव विविधता और कार्बन भण्डारण पर उनके प्रभाव, भविष्य में खाद्य उत्पादन मागों पर और खाद्यान मागों पर विश्लेषण करेंगे। मौजुदा कृषि भूमि को तेज करने की आवश्यकता है। हांलाकि दोनो प्रक्रियाओं को परिणामस्वरुप जैव विविधता के अनुसार होगा। साथ ही अनुमानों से पता चलता है कि गहन प्रक्रियाओं के कारण कार्बन स्टॉप बढता है और प्राकृतिक भूमि के कृषि में रुपान्तरण के कारण घटता है। संन्तुलन पर हम पाते है कि कार्बन स्टॉप भविष्य की कृषि उत्पादकता के परिदृश्यों के साथ बढता है जैसे कि यहाँ मॉडल किया गया है। अन्त में हम आगे कृषि गहनता को खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने और फसल भूमि और चारागाह के विस्तार को धीमा करने में मदद करने के लिये एक महत्तवपूर्ण तत्व के रुप में देखते है। *(हिन्जू — सुल्सर, 2020)*

सतत् विकास की अवधारणा

माल्थस जैसे प्रारम्भिक अर्थशास्त्री के लेखन में प्रतिध्वनित होती है। जब से प्राकृतिक संसाधनों के ह्रास की बात करते है। 'संयुक्त राष्ट्र' ने कम से कम सन् 1972 में स्टॉकहॉम में आयोजित 'मानव विकास सम्मेलन' के बाद से इस विचार को ज्वलन्त कर लिया है। परिचय सतत् विकास की अवधारणा और सतत् विकास लक्ष्यों (एसडीजी) के विकास का एक संक्षिप्त इतिहास प्रस्तुत करता है।यह बताता हे कि भारत की अपनी विकास नीतियों और प्रतिबद्धताओं के साथ अवधारणा कैसे मिलती है और भारत के विकास प्रतिमान एसडीजी को प्राप्त करनक के अपने प्रयासों में मात्रा से गुणवत्ता में स्थानान्तरित हो गये जो कि वाल्युम का फोकस है। परिचय में अन्य सभी विषयों का संक्षिप्त विवरण शामिल है। *(चतुर्वेदी – जेम्स 2019)*

जल, स्वच्छता और स्वास्थ्य

जल और स्वच्छता में सतत् विकास की प्राप्ति अर्थात सतत् विकास लक्ष्य (एसडीजी) के लिये राष्ट्रीय स्तर पर सामाजिक और आर्थिक पानी की जरुरतों की व्यापक निगरानी और ज्ञान आधार की आवश्यकता होती हैजिससे क्षैत्रिय से वैश्विक स्तर पर नकारात्मक पर्यावरणीय अभिव्यक्तियाँ नही हो। जैव भौतिक तनाव, सामाजिक अभाव, और आर्थिक असमानता के साथ–साथ तजी से बढती जनसंख्या के जटिल परस्पर जुड़े हुए वेब के साथ विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में भारत एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। जल संसाधनों और स्वच्छता सुविधाओं के उपयोग, उपलब्धता और पहुँच से संबन्धित इनमें से कुछ चुनौतियों का सामना करता है। स्थिरता प्रतिमान में समाज और अर्थव्यवस्था के योगदान को स्वीकार करते हुए, यहाँ हमने पानी और स्वच्छता के जैव–भौतिक जल संसाधन के घटते स्तर और धीमी गति से, तेजी से विकासशील सामाजिक संकेतकों को दिखाया गया है। पिछले रुझानों से हमने 2050 तक भारत की जैव–भौतिक खपत के संभावित परिदृश्य की गणना की है। हमने अर्न्तसम्बन्धों का भी विश्लेषण किया है। भारत में स्वास्थ्य के साथ पानी और स्वच्छता ै(क्ळ6), ै(क्ळ3) और गरीबी का अन्त ै(क्ळ.1) में स्वच्छता संबन्धी संकेतों में सुधार पर प्रति व्यक्ति सकल घरेलु उत्पाद में वृद्धि का सकारात्मक प्रभाव दिखाते है, जो विशेष रुप से बच्चों और वृद्ध आबादी में पानी और स्वच्छता संबन्धी बीमारियों को कम करने के लिये सकारात्मक प्रभाव डालते है। यह संचयी मूल्यांकन ढांचा भारत में सामाजिक और आर्थिक विकास परिदृश्य को ध्यान में रखते हुए जल संसाधन विनियोग और स्वच्छता के मूल्यांकन प्रबंधन प्रतिक्रिया और नीति कार्यान्वय को राष्ट्रीय स्तर पर जल और स्वच्छता क्षैत्र की समावेशी स्थिरता को प्राथमिकता देने के लिये एक उपकरण का योगदान देता है।

खुले में डंपिंग मेट्रो–शहरों के अलावा, अधिकांश भारतीय शहरों में एक सामान्य सीधे दहन और कचरे के क्षय के माध्यम से विषाक्त और ग्रीनहाउस गैसों (जीएचजी) के उत्सर्जन के कारण महत्तवपूर्ण पर्यावरणीय और स्वास्थ्य जौखिम पैदा करती है। इसलिये विभिन्न तरीकों का प्रयोग करते हए 'एकीकृत ठोस अपशिष्ट प्रबन्धन' की बहुत आवश्कता है। जैसे कि भस्मीकरण, खाद बनाना, अवायवीय पाचन, अपशिष्ट व्युत्पन्न, ईंधन, सामग्री पुनः प्राप्ति सुविधा और सेनिटरी लैंडफिलिंग आदि। *(राय – प्रमाणिक, 2019)*

वर्तमान परिवेश में विकासशील देशों को विनिर्माण गतिविधियों को आउटसोर्स करने पर जोर दिया जा रहा है, भारत जैसे देश सक्रिय रुप से बहुर्राष्ट्रीय कंपनियों सुक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों के साथ साजेदारी करने के लिये आमन्त्रित कर रहे है। यह माना जाता है कि यह पहले उनके आर्थिक पहल को आगे बढाने में मदद करेगा। ज्यादातर राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय एजेन्सियाँ और नियामक संस्थाएं कम्पनी पर ध्यान केन्द्रित रखते हुए स्थिरता में सुधार के लिये एमएसएमई के योगदान को ध्यान में रखते हए इसे अक्षर नजरअंदाज किया जाता है। सतत् विकास लक्ष्यों के सफल कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने में प्रत्येक राष्ट्र दस्तावेजीकरण करना महत्तवपूर्ण है। एमएसएमई द्वारा छोटी लेकिन प्रभावी सतत् विकास पहल का दस्तावेजीकरण करने का प्रयास करता है। *(जोसेफ – कुलकर्णी 2020)*

निष्कर्ष

भारत का पर्यावरण और जलवायु प्राकृतिक संपदा पर ऐतिहासिक निर्भरता को, जिसमे जल, जंगल, वायु, नदियाँ, पशुधन, वन्य–जीव एवं औद्योगिक आर्थिक सतत् विकास का भारत का एक विशलेषणात्मक का अनुसंधान का पर प्रकाश डालने की कोशिश की गई। जिसके अन्तर्गत जलवायु परिवर्तन गंभीर विषय पर और ग्लोबल वार्मिंग स्वास्थ्य पर पड़ने वाले हानिकारक प्रभाव और स्वच्छता पर भी गहरा मंथन किया गया। विकासशील सामाजिक अभाव संकेतों में वैश्विक स्तर पर नकारात्मक पर्यावरणीय अभिव्यिक्तियाँ न हो। आर्थिक असमानता के साथ– साथ बढती जनसंख्या के प्रभाव से सतत् विकास के लक्ष्य में अवरोध उत्पन्न होता है। बदलती जलवायु और पर्यावरणीय पारिस्थितिकी का ग्लोबल वार्मिंग पर प्रभाव पड़ता है जिसमें वैश्विक तापमान में बढोतरी, सुखा, कृषि उत्पादन में कमी, बाढ, तूफान बर्फ और ग्लेशियारों का पिघलना आदि ग्लोबल वार्मिंग की स्थिरता गिरी। भारत के सतत् विकास के लक्ष्य एवं गंभीर विषय होने से अतिदोहन के कारण जिसमें जीवन–आजीवन और पर्यावरणीय जटिल विषयों को बचाने की पहल जानी चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. (1) चतुर्वेदी, सचिन, – टीसी, इत्यादी (2019) ''एजेडा और भारत से गुणवत्ता की ओर बढना'' परिचय सतत् विकास लक्ष्य और भारत ; डीओआई; 10.10071978–981–32–9091–4–1
2. (2) महाजन, विजय – सिंह, जीत, (2022), ''जीवन, आजीविका और पर्यावरण : भारत में सतत् विकास लक्ष्यों की चुनौती'' वित्तिय संकट गरीबी और पर्यावरण स्थिरता : एसडीजी और कोविड़ 19 रिकवरी के संदर्भ में चुनौतियाँ। क्व् – 10.1007/978–3–030–87417–9–7
3. (3) विजो, सुमन, (2020) '' भारत में जलवायु परिवर्तन और सतत् विकास'' : इसके दण्ड पर एक धारणा : समावेशी विकास परियोजना।
4. (4) हिन्जू, आर, सुल्सर, टीवी – हयुफनेर, आर इत्यादि, (2020), ''भारत में कृषि विकास और भूमि उपयोग परिवर्तन : संयुक्त राष्ट्र सतत् विकास लक्ष्यों (एसडीजी) के बीच व्यापार नापसंद का परिदृश्य विश्लेषण'', Earth's future advancing earth end space science, https%//doi.org/10.1029/2019EF001287
5. रॉयः अजिश्नु – प्रमाणिक, कौशिक (2019) ''भारत में सतत् विकास लक्ष्य 6 की प्रगति का विश्लेषणः अतीत, वर्तमान और भविष्यः पर्यावरण प्रबन्ध जर्नरल, खण्ड 32 पृष्ठ 1049–1065 (https!//doi.org10.1016/j.jnvman.2018 11.60)
6. जोसेफ, शांजी – कुलकर्णी, अपूर्व विक्रान्त (2020) ''पर्यावरण के लिये सतत् योगदान बनाना पुणे में एमएसएमई से केस स्टडीजः, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल इकोलॉजी एण्ड सस्टेनेबल डवलपमेन्ट'' (4) : 1–14 DOI%10-4018/vkbZts, lb, lMh 20201001
7. आहूजा, राम (2019), ''सामाजिक समस्याए'' : जयपुर, रावत पब्लिकेशन, (पेज 286)

❖◆❖